



## अंजीर की उन्नत खेती

डी. कुमार\*, एम. पाटीदार\*, एस.सी. मीना\* और ए. पाटीदार\*

अंजीर को एक बहुत ही लोकप्रिय फल माना जाता है। इसको ताजा और सूखे दोनों रूप में खाया जाता है। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से एक लाभदायक फल है। अंजीर की खेती हमारे देश के किसानों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रही है। इसका फल अन्य फलों की अपेक्षा काफी मूल्यवान होता है। इसकी खेती करके किसान भाई अच्छा पैसा कमा सकते हैं। अंजीर का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। इसके सेवन से स्तन कैंसर, सर्दी-जुकाम, दमा, मधुमेह और अपचन जैसे रोग दूर होते हैं, क्योंकि इसमें एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। महिलाओं द्वारा अंजीर के सेवन से हार्मोनल समस्या दूर हो जाती है। इसके अलावा भीगे हुए अंजीर के सेवन से वजन कम किया जा सकता है।

**अंजीर**, दिल के रोगों के साथ डायबिटीज के रोगियों के लिए भी बेहद उपयोगी है। कच्चे और सूखे दोनों प्रकार के अंजीर में प्रोटीन, फाइबर, हैल्दी फैट, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन और कॉपर भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं।

### भारत में अंजीर

अंजीर (अंग्रेजी नाम - Fig, वानस्पतिक नाम - 'फिकस कैरिका', प्रजाति - फिकस, जाति - कैरिका, कुल मोरेसी) एक वृक्ष का फल है जो पक जाने पर गिर जाता है। पके फल को लोग खाते हैं। इसका सूखा फल बिकता है। देश में इसकी खेती राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात तथा उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के कुछ भागों में प्रमुख रूप से की जाती है।

\* वैज्ञानिक आर.आर.एस., काजरी, जैसलमेर



### अंजीर के लिए जलवायु एवं भूमि

अंजीर की खेती के लिए शीतोष्ण एवं शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। फलों के अच्छे विकास के लिए शुष्क जलवायु काफी उपयोगी मानी जाती है। इसकी फसल

पर पाले का अत्यधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। अंजीर की खेती लगभग सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। दोमट एवं मटियार दोमट मृदा इसकी खेती के लिए उत्तम मानी जाती है। भूमि में जल-निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

### अंजीर की उन्नत किस्में

अंजीर की उन्नत किस्मों में सिमराना, डायना, कालीमिरना, कडोटा, काबुल, मार्सलीज और व्हाइट सैन पैट्रो आदि काफी लोकप्रिय हैं। इसके अलावा पूना अंजीर (एड्रियाटिक), जो महाराष्ट्र के पुणे क्षेत्र में उगाया जाता है, भी काफी लोकप्रिय किस्म है।

### पौध रोपाई एवं तरीका

अंजीर की पौध लगाने के लिए खेत को तैयार कर लिया जाता है। गड्ढे तैयार करने के लिए मिट्टी तथा गोबर की सड़ी हुई खाद

## अंजीर में लगने वाले रोग एवं नियंत्रण

अंजीर के बाग में बहुत कम रोग लगते हैं। कुछ कीटजनित रोग इसकी उपज को नुकसान पहुंचाते हैं। अगर फसल के समय कीट दिखाई दें तो नियंत्रण के लिए उचित उपचार करना चाहिए। इसके अलावा उपज के समय जलभराव उपज को नुकसान पहुंचाता है। इसलिए जलभराव की स्थिति से बचाव करना चाहिए। अंजीर के फल जब पूरी तरह से पक जाएं तभी उनकी तुड़ाई करनी चाहिए।



इसके फल पकने पर किस्मों के अनुसार अलग-अलग रंग के होते हैं। अंजीर का फल पकने पर काफी मुलायम हो जाता है। उस दौरान ही इसकी तुड़ाई कर लेनी चाहिए। फलों को तोड़ने के बाद इन्हें किसी पानी से भरे बर्तन में ही रखना चाहिए। फलों की तुड़ाई करते समय हाथ में दस्ताने पहनने चाहिए। इसका रस लग जाने से त्वचा रोग होने की समस्या हो सकती है। अंजीर के फलों की तुड़ाई अगस्त माह में की जाती है।

### उपज एवं लाभ

अंजीर की उपज इसकी किस्मों पर निर्भर करती है। एक हैक्टर खेत में लगभग 250 अंजीर के पौधे लगाए जा सकते हैं। इसके एक पौधे से लगभग 20 किलो अंजीर फल प्राप्त हो जाते हैं। बाजार में अंजीर का भाव 500 से 800 रुपये प्रति किलो रहता है। इस हिसाब से एक हैक्टर खेत में अंजीर की खेती से 30 लाख रुपये तक की कमाई हो सकती है।

को बराबर मात्रा में मिला लेना चाहिए। इसके उपरान्त खुदे गड्ढे को गोमूत्र से उपचारित भी कर लेना चाहिए। गड्ढे में पौधे को रोपित कर देना चाहिए। अंजीर का पौधा लगाने के लिए सबसे उचित समय जुलाई से अगस्त माह के बीच होता है।

### सिंचाई

अंजीर की खेती में अधिक सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन गर्मी के मौसम में अंजीर के पौधों को पानी की अधिक आवश्यकता पड़ती है। इसलिए गर्मी में ज्यादा सिंचाई की जरूरत होती है। वहीं जाड़े के मौसम में 15 से 20 दिनों के अंतराल पर पौधों को सिंचाई की जरूरत पड़ती है। बारिश के मौसम में आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करनी चाहिए।



पेड़ पर अंजीर फल



अंजीर के पौधे

### खरपतवार नियंत्रण

अंजीर के पौधे अच्छी तरह से विकास कर सकें, इसके लिए खरपतवार नियंत्रण आवश्यक है। प्राकृतिक माध्यम से निराई-गुड़ाई कर खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए। इसलिए जब भी अंजीर के बाग में खरपतवार दिखाई पड़ें तभी इसकी निराई-गुड़ाई कर खरपतवार को नष्ट कर दें।

### समस्याएँ

**पक्षियों द्वारा फलों को नष्ट करना**  
अंजीर के खेत में पक्षी फलों को नष्ट कर देते हैं। इसमें घरेलू चिड़िया, कौवे इत्यादि शामिल हैं। इसके लिए कुत्ते पालने, स्पीकर



उपयोग के लिए तैयार अंजीर

से आवाज, नेट का प्रयोग इत्यादि किया जा सकता है।

**नर्सरी:-** अधिक आमदनी के लिये अंजीर की नर्सरी तैयार करनी चाहिए तथा पौधों को बेचना चाहिए। इससे अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

**प्रसंस्करण:-** अंजीर के प्रसंस्करण से अंजीर की कीमत में वृद्धि की जा सकती है। इससे 400-500 रुपये में बिकने वाले अंजीर की कीमत 1300-1500 रुपये प्रति किलो हो जाती है।

**पौधों का टिशू कल्चर:-** इसमें अंजीर के शुद्ध पौधे कम्पनियों/नर्सरी द्वारा सप्लाय होते हैं तथा एक पौधा 65-70 रुपये में आता है।

**नर्सरी:** नर्सरी से भी अंजीर के पौधों की सप्लाय होती है जैसे पूना अंजीर, डायना अंजीर इत्यादि।

**सिंचाई की सुविधाएं:-** अंजीर में सिंचाई के लिए ड्रिप सिस्टम उपयुक्त रहता है। इससे शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई करना आसान रहता है।

**प्रसंस्करण:-** अंजीर का प्रसंस्करण करने के लिए पहले उन्हें गर्म पानी में रखते हैं। इसके बाद सुखाकर गर्म चाशनी में रखते हैं तथा बाद में उन्हें पंचिग करते हैं। इस सब के बाद बाजार में बेच देते हैं। पैकिंग दो प्रकार की होती है। प्रथम कार्डबोर्ड पैकिंग तथा दूसरी वैक्यूम पैकिंग। इस तरह प्रोसेस किया गया अंजीर 800-1000 रुपये प्रति किलो बिकता है।

**अंजीर लगाने के तरीके:-** अंजीर को वर्गाकार, आयताकार एवं षष्टकोणीय तरीकों से लगाया जाता है। इसके एक हैक्टर में लगभग 250 पौधे लग सकते हैं तथा एक पौधे पर लगभग 10 किलो फल लगते हैं।